IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूतः गाँधी जी

डॉण मिन्तु

असिण्प्रोणहिंदी

कुण्माण राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुरए गौतमबुद्धनगर

शोध सारांश

राजनीतिक सुधार के साथ.साथ सामाजिक सुधार के क्षेत्र में भी गांधीजी के विचारों एवं कार्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।गांधी जी जातिवादी व्यवस्थाए संप्रदायवाद जैसी बुराइयों के खिलाफ संघर्ष कर उनके सम्मुख खड़े रहे।दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने श्वेत लोगों की रंगभेद नीति का कड़ा विरोध किया। भारत में भी उन्होंने समाज सुधारक के रूप में जनमानस पर होने वाले अत्याचारोंएअन्याय एवं उत्पीड़न के विरुद्ध बिल्कुल बजाया।दलितों की मुक्ति के लिए उन्होंने जो प्रयास किए वह उनके सामाजिक न्याय को स्पष्टतरू परिलक्षित करते हैं। गांधी जी के सामाजिक विचार समाज में क्रांति की बात करते हैं।

समाज सुधार के क्षेत्र में गांधीजी के कार्य एवं विचार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। महात्मा गांधीजी ने स्वराज्य आन्दोलन के साथ.साथ व्यवहारिक जीवन के लिए रचनात्मक कार्यक्रम को अपनाया। उनका अहिंसात्मक राज्य वर्ण व्यवस्था के सिद्दांत पर आधारित है। उनके अनुसार वर्ण का अर्थ अत्यधिक सरल है। वे मानते हैं कि हम अपने परंपरागत कार्य को केवल जीविका हेतु ही करें एवं वह नैतिकता के मौलिक सिद्धान्त पर आधारित हो। यथार्थ में गांधीजी वर्ण को जाति नहीं अपितु वर्ग मानते थे। उनकी वर्ण व्यवस्था के तीन मुख्य सिद्धांत थे।पहलाएसमस्त उद्योग समान हो। इनमें ऊंच नीच का कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। दूसराए परम्परागत एवं वंशानुगत कार्य को केवल जीवित तथा समाज में कल्याण की भावना से अनुप्राणित होकर करें न कि संग्रह की प्रवृति से। तीसराए सभी की आय समान हो। सभी को समान पारिश्रमिक मिले क्योंरि सभी कार्य समान है एवं सभी की सामान्य आवश्यकताएँ एक जैसी हैं। आलोचकों द्वारा गांधी जी की इस व्यवस्था की आलोचना की गई। उनका मानना था कि किसी भी व्यक्ति से यह कहना कि यह उसका वंशानुगत पेशा हैए इसी को अपनाएंए तो यह अनुचित है। हो सकता है वह अपने वंशानुगत पेशे से अधिक अन्य किसी कार्य को करने की योग्यता रखता हो। उनका मानना था कि यदि किसी नाई या धोबी का लड़का डॉक्टर या इंजीनियर बनने की योग्यता रखता हो और उसे पेशेगत कार्य को करना पड़े तो यह उसकी योग्यता पर कुठाराघात होगा। गांधीजी आलोचकों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा कि मैं नाई या भंगी के बच्चों को ऊंचा कार्य करने के लिए मना नहीं कर रहाए पर वह उच्च पेशाए समाज कल्याण के लिए होना चाहिएए धन संग्रह के लिए नहीं। दूसरे वे कहते हैं कि मेरी वर्ण व्यवस्था में कोई ऊंचा या नीचा नहीं है। मेरी नजर में कोई व्यक्ति जन्म एवं पेशे से ऊंचा नहीं होता। सभी मनुष्य समान रूप से जन्म लेते हैं।

अस्पृश्यता भारतीय समाज का एक गम्भीर दोष रही है। गांधीजी ने अस्पृश्यता के विरुद्ध संघर्ष का बीड़ा उठाया और इसमें उन्हें सफलता भी मिली। एक सभा को सम्बोधित करते हुए उन्होंने बताया था कि ष साम्राज्य की शैतानियत मिटाना मुझे इतना ज्यादा मुश्किल मालूम नहीं होता। साम्राज्य कीशैतानियत व्यवहारिक है। अस्पृश्यता की शैतानियत ने धार्मिक रंग ग्रहण कर लिया है। हमारे धर्माधिकारी अज्ञान में इतने डूबे हैं कि उन्हें समझाया ही नहीं ना सकता। अस्पृश्यता दोष के निवारण का अर्थ ही यह है कि इसे हिन्दू समाज से स्वीकार कराया जाए।अन्यथा करोड़ों हिन्दुओं का नाश करके अस्पृश्यता दोष मिटा सकेंए यह असम्भव है।ष अस्पृश्यता निवारण के लिए गांधीजी ने अपनी कार्यनीति का मसौदा पैश करते हुए कहा था.'' अस्पृश्यता पाप हैए इसलिए उस पाप को मिटाना चाहिए। अस्पृश्यता को मिटाना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं एपरन्तु वह अंत्यजो के भीतर से नहीं बल्कि हिन्दुओं में से मिटाना चाहिए।ष2गाँधीजी ने अस्पृश्यता की तकलीफ व्यापक स्तर पर महसूस की थी।

२० दिसम्बर 1920 को एक सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने श्री गोपाल कृष्ण गोखले को उद्धृत किया .श्जैसे हम अंत्यजों को अस्पृश्य समझते हैं वैसे ही यूरोप के लोग हमें हिंदू मुसलमान सबको अस्पृश्य समझते हैं। हमें उनके साथ रहने की अनुमति नहींएहमें उनके बराबर अधिकार नहीं।हिंदुओं ने अंत्यजों को जितना बेहाल किया है उतना ही दक्षिण अफ्रीका के गौरों ने भारत वासियों को किया है सभारत के बाहर से साम्राज्य के जितने उपनिवेश हैं उनमें भी गौरों का बर्ताव ऐसा है जैसा कि हिंदू समाज का अछूतों के साथ है।''3

निश्चय ही गांधीजी ने इस समस्या को जितना समाप्त किया उतना अन्य किसी ने नहीं किया। सामाजिक क्षेत्र में गांधी जी का एक प्रमुख आदर्श भारत के सभी संप्रदायों को एकता के सूत्र में आबद्ध करना था। उनका मानना था कि धर्म को राष्ट्रीयता का आधार नहीं मानना चाहिए।सांप्रदायिक सद्भाव के लिए एक दूसरे के करीब आना आवश्यक है ।''अगर हिंदू माने की सारा हिंदुस्तान सिर्फ हिंदुओं से भरा होना चाहिए तो यह एक निरा सपना है।मुसलमान अगर यह सोचे कि उसमें सिर्फ मुसलमान रहें तो उसे भी सपना ही समझना चाहिए ।फिर भी हिंदूए मुसलमानए पारसीए ईसाईएजो इस देश को अपना वतन मानकर बस चुके हैं एक देसीए एक मुल्कीए वे देशी भाई हैं एउन्हें एक दूसरे के स्वार्थ के लिए भी एक होकर रहना पड़ेगा।''4 गांधी जी का मानना था कि धर्म को राष्ट्रीयता का आधार नहीं मानना चाहिए।उन्होंने अंत तक भारत के विभाजन का विरोध कियाए और जब भारत का विभाजन हो गया तो उन्होंने हिंदू मुस्लिम दंगों को रोकने का भरसक प्रयास किया।

स्त्रियों की स्थिति को सुधारने के लिए गांधी जी ने महिला अधिकारएपर्दा प्रथा आदि पर अपनी क्रांतिकारी मत प्रस्तुत किए।वे स्त्रियों की स्वतंत्रता के पक्ष में थे।उन्होंने यह स्वीकार किया था कि उन्हें अहिंसा और सत्याग्रह के मार्ग पर चलने की प्रेरणा अपनी मां और पत्नी से मिली थी।उनका कहना था कि .'' मैं बेटे और बेटियों के साथ बिल्कुल एक जैसा व्यवहार करूंगा। जहां तक स्त्रियों के अधिकार का प्रश्न हैए मैं कोई समझौता नहीं करूंगा।''उनका मानना था कि अगर स्त्रियों को आजाद होना है तो उन्हें निडर बनना होगा।परिवार और समाज के बंधनों कोए थोपे हुए अन्याय का विरोध करना होगाए और यही ताकत उन्हें जुल्मों से मुक्ति दिला सकती है। गांधी जी के विचार से महिलाओं को अपने अधिकारों एवं कर्तव्य का ज्ञान होना चाहिए।अगर उन्हें सशक्त बनना है तो इसकी पहल परिवार से ही होनी चाहिए जब तक वह गलत बातों को सहेगी उसके साथ जुल्म होता रहेगा।उनका कहना था कि जिस दिन एक महिला रात में सड़कों पर स्वतंत्र रूप से चलने लगेगी उस दिन हम कह सकते हैं कि भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है।

महात्मा गांधी ने केवल विवाह की व्यवस्था को व्यवहारिक आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया। उनके अनुसार विवाह एक पवित्र संस्कार है।यह आत्म अनुशासन की प्रक्रिया है।''विवाह का लक्ष्य भौतिक होते हुए भी आध्यात्मिक मिलन है।यह जिस मानवीय प्रेम को अवतरित करता हैएउसका उद्देश्य दिव्य या सार्वभौमिक प्रेम की ओर एक सीढी के रूप में काम करना है।''5 महात्मा गांधी ने विवाह पद्धति में भी अनेक सुधारों का सुझाव दिया। उन्होंने बाल विवाह तथा अनमेल विवाह का विरोध किया। महिलाओं को भी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया।उनका मानना था कि श इस देश में सही शिक्षा महिला

को अपने पति को भी नहीं कहने की कला सिखाना है। उसे यह सिखाना है कि अपने पति के हाथों में केवल उपकरण या गुड़िया बननाए उसके कर्तव्य का हिस्सा नहीं हैएउसके अधिकार भी है और कर्तव्य भी।''6

उन्होंने अंतर्जातीय और अंतरूसंप्रदायों में विवाह को भी प्रोत्साहन दिया ।गांधी जी विधवा विवाह के भी कट्टर समर्थक थे। उनका मानना था कि बाल विधवाओं को दूसरी शादी की अनुमति दी जाए। युवा विधवा अगर चाहती है कि शादी हो तो उसे स्वतंत्रता दी जाए। वास्तव में गांधी जी नारी को समाज का मुख्य आधार मानते थे और इसलिए प्रत्येक स्तर पर नारी के उत्थान के हिमायती भी थे। स्त्रियों की शिक्षा पर भी गांधी जी की पैनी दृष्टि थी। उनका विचार था कि शिक्षा का उद्देश्य शरीर आत्मा व मस्तिष्क का समन्वित विकास है। इस दृष्टि से वह अंग्रेजों द्वारा भारत में स्थापित शिक्षा पद्धति को बहुत दोषपूर्ण मानते थे ।उनका मानना था कि यह पद्धति व्यक्ति के शारीरिक एबौद्धिक या आत्मिक किसी भी प्रकार का विकास करने में असमर्थ है। शिक्षा का माध्यम विदेशी होने के कारण विद्यार्थियों का बहुत अहित होता है स।उनके अनुसार शिक्षा के अंतर्गत प्रत्येक विद्यार्थी को मूल रूप में कोई ना कोई दस्तकारी सिखाई जाए एजिसे सहसंबंध का सिद्धांत कहते हैं। इसके अलावा शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होए शिक्षा स्वावलंबी हो जिससे विद्यार्थी अपना भरण पोषण कर सके गांधी जी ज्ञान आधारित शिक्षा के स्थान पर आचरण आधारित शिक्षा के समर्थक थे।उनके अनुसार शिक्षा ऐसी हो जो अच्छे बुरे का ज्ञान करा सके। साथ ही उसे नैतिकता के पथ पर अग्रसर करे।गांधी जी के सामाजिक विचारों में उनके समाज की बुनियाद अहिंसा पर टिकी हैए इसलिए वह अपने आदर्श राज्य को अहिंसात्मक समाज कहकर पुकारते हैं ।उनका मानना था कि सभी समस्याओं की जड़ मनुष्य की हिंसात्मक प्रवृत्ति है। अतः समाज में हिंसा को किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया जा जाना चाहिए।गांधी जी का ध्यान भारतीय समाज की उन समस्याओं की ओर गया जिसके कारण संपूर्ण समाज की जड़ी खोखली हो चुकी थी। यद्यपि भारतीय समाज और संस्कृति की गणना विश्व की महानतम संस्कृतियों में की जाती थी किंतु स्वस्थ परंपराओं के स्थान पर सामाजिक बुराइयां हावी होती चली गईंसमाज को संगठित एवं व्यवस्थित रूप प्रदान करने के लिए गांधीजी ने अनेक प्रयत्न किए।इस प्रकार गांधी जी द्वारा मानव समाज हेतु अनेक महान कार्य किए गए।

गांधीवाद केवल कोरा दर्शन नहीं हैएवरन व्यावहारिक भी है।उन्होंने अपने सिद्धांतों को स्वयं के जीवन में अपनाकर उन्हें व्यावहारिक रूप प्रदान किया। गांधीवाद एक स्थाई चिंतन धारा हैए जिसने भारतीय जीवन को गौरवान्वित किया है। गांधी जी का नाम सामाजिक क्रांति लाने वाले महापुरुषों की सूची में श्रेष्ठ स्थान पर है।

सन्दर्भ सूची

1ण डायरीरू खण्ड. 3 रूपृष्ठ संण30

2ण पूर्णाहुतिरू खण्ड 2 रूपृष्ठ संण49

3ण डायरीरू खण्डः 3 रूपृष्ठ संण27 28

4ण हिंद स्वराजरू पृष्ठ संण 31

5ण यंग इंडियारू 21.5.31 रूरूपृष्ठ संण115

6ण हरिजन रू 2.5.36रू पृष्ठ संण93